- बेहद का बाप हम बच्चों को याद की यात्रा करा कर आपे बेहद में खड़े हैं और बच्चों को देख2 हर्षित होकर बोले -

" बच्चे यह है याद की यात्रा। जिससे सभी दुःख दूर हो जाते हैं। हरेक के सभी दुःख दूर हो जाते। बाप को याद करने से अगर सभी दुःख दूर हो जाते हैं तो फिर बाप को याद क्यों नहीं करते हो। हरेक आपे ही अपनो दुःख दूर करनी है। बाप सिर्फ ईशारा देते हैं। युक्ति बताते हैं। इसमें कोई तकलीफ तो है न कोई से कोई आशीर्वाद मांगने की दरकार ही नहीं। कोई कृपा मांगने की दरकार नहीं। ऐसे बेहद का बाप है तो भला मांगे किस से। स्वीट बाबा के चिल्ड्रेन्स सभी सदैव स्वीट ही रहते हैं। मनसा वाचा कर्मणा किसको दुःख नहीं देना है। अंग्रेजी में कहते हैं थाट, वर्ड, डीड। ऐसा कोई काम न करना चाहिए, मुख से ऐसा न चाहिए। जो किसको दुःख हो। मीठा बनना जरूर है' तो गुल2 होकर चलें, फूल होकर चलें। मीठे बनते जाओ। बीती को चिन्ता नहीं। और सभी से प्यार से चलो। क्योंकि बाप तो हमारे सभी की पूरी करते हैं। फिर पाई-पैसे की ग्र कामनाएं गिट2 क्यों। आपस में गिट2 होती है तब जब बाप को भूल हैं। बाप सभी कामनाएं पूरी करते हैं। फिर क्यों किसको तंग करें। वा दुःख करें। किसको कोई भी बात हो तो बाप को याद करो तो एकदम शीतल हो जावेंगे। जानते हो कि शीतल बनाने वाला हम बच्चों का बाप हमारा ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट है। यह भी एक दफा सर्विस करते हैं। जानते हो बाप आये हैं सभी के दुःख राज करते हो सुखधाम में जाते हो बाकी सभी शान्तिधाम में जाते हैं। सुख भी स्थापन करते हो तो शान्ति स्थापन करते हो। समय भी पूरा बताते हैं। फिर तो तुम बच्चों को आन्तरीक खुशी होनी चाहिए। बाप को किया और रोमांच खड़े हो जानी चाहिए। नयन से मोती आ जानी चाहिए। क्यों कि 5000 वर्ष के बाद मिले सुख देते हैं तो दिल में सुख होता क्योंकि अभी चल रहे हैं बाप की वतन। यह तुम्हारा कोई वतन नहीं यह तो रावण राज्य पराई राज्य में बैठे हो। चलना है अपनी राजधानी में सिर्फ अपनी याद की यात्रा से। कोई तकलीफ नहीं। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।

पायन्टसः- अभी तुम यहां बैठे हो जानते हो बाप पढ़ाते हैं। पढ़ाते वह है जो कब न सुना है नया बाप है ना। आगे कृष्ण को समझते थे। तो यह है नई बात। बाप भी नया पढ़ाते भी हैं नई हैं भी बाप बहुत सहज बात बताते हैं। तुम सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हो। गंगा स्नान भी बहुत हुआ कुछ भी नहीं। और ही मैले हो गये। कहते भी हैं पतित पावन परमपिता परमात्मा हैं। फिर भी आद के पास जाते हैं। यह समझते नहीं हैं वह पावन बना नहीं सकते हैं। क्योंकि जन्म तो फिर भी से लेते हैं। बाकी हां पवित्र हैं इसलिए उन्हों का मान है। फालोअर्स बनते हैं यह भी है रांग। अभी यह मार्ग की बातें भूलनी हैं। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों मुझे याद करो तो अन्त मते सो गति हो जावेगा नाटक पूरा होता है। अब वापस जाना है। सभी का हिसाब-किताब चुक्तु होना है। अनेक प्रकार की सज़ाएं हैं। काशी कलवट खाते हैं तो फिर सज़ा मिल जाती है। सा० कराते जाते हैं। सा० बिगर सज़ा कैसे देंगे। वह ऐसी चलती हैं। ऐसा महसुस होता है जैसे जन्म-जन्मान्तर की सज़ा मिल रही है। टाईम बहुत थोड़ा लगा इसलिए बाप कहते हैं पास विथ आनर हो दिखाओ। तुम जो विश्व में पीस स्थापनकरते हो उनकी प्राप्ति यह है। यह पद पाते हो। फिर जो जितनी मेहनत करे। सभी कहते भी हैं बाबा हम नर से ना० बनेंगे। सत्य ना० की कथा। बाप कहते हैं विकारों का दान दो तो छूटे ग्रहण। ड्रामा अनुसार छूटना अनेक बार भारत पर खास दुनिया पर आम राहू की दशा बैठती है। फिर बृक्षपति की दशा बैठती सुख तुम पाते हो और कोई धर्म वाला उतना नहीं पाता। यह धर्म है ही सुख देने वाला। अच्छा मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। ओम